RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/280/2015-17
e-paper : www.srushtiagronews.com

मुख्यमंत्री को राष्ट्रीय स्तर के 6 पुरस्कार भेंट

सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 अंक-8 जयपुर, 1 से 15 जुलाई 2017 मूल्य - 2 रुपए पाक्षिक पृष्ठ-8

प्रदेश व देश के सर्वागीण विकास के लिए
किसानों का विकास जरूरीः सैनी

जयपुर। प्रदेश के कृषि एवं पशुपालन मंत्री प्रभूदयाल सैनी ने कहा कि प्रदेश व देश के सर्वागीण विकास के लिए किसानों का आर्थिक विकास जरूरी हैं। किसानों के आर्थिक विकास के लिए राज्य सरकार ने अनेको जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की हैं। इन योजनाओं में 17 लाख रूपये तक की छूट का प्रावधान हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ग्रामीण व किसान के विकास को प्राथमिकता दी हैं। राज्य सरकार ने किसानों व पिछड़ो के विकास के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित कर इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का काम किया हैं। किसानों के खेतों में फार्म पौण्ड बनवाने, बगीचा लगवाने, सब्जी लगवाने, मसाला उद्योग लगवाने आदि पर अनुदान की व्यवस्था की गई हैं। सभी ग्रामीण व किसान सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी रखे तथा समय पर आवेदन कर लाभ अर्जित करें तथा पड़ौसियों को भी जानकारी देकर लाभान्वित करावें। प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान सरकार का मुख्य ध्येय राजस्थान प्रदेश का चहुंमुखी विकास करना है। आज राजस्थान प्रदेश कृषि के क्षेत्र में भारत में प्रथम स्थान पर है। कृषि में तकनीकी का उपयोग करते हुए उन्नत पैदावार एवं किसानों का ज्यादा से ज्यादा फायदा हो इस क्षेत्र में भी लगातार न केवल अनुसंधान हो रहे हैं अपितु उनका धरातल पर प्रयोग भी हो रहा है, उसी का परिणाम है कि राजस्थान प्रदेश कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।

डवलपमेंट डायलॉग विद नीति आयोग
राष्ट्रीय विकास एजेंडे में सक्रिय सहभागी होगा राजस्थान

जयपुर। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने नीति आयोग की ओर से तैयार किए जा रहे राष्ट्रीय विकास एजेंडे में राजस्थान की एक सक्रिय सहभागी के रूप में प्रतिबद्धता दोहराई है। उन्होंने कहा कि दीर्घकालीन एवं सतत विकास के लिए राज्य सरकार केन्द्र के साथ मिलकर चिन्हित क्षेत्रों के विकास पर अधिक फोकस करेगी। श्रीमती राजे मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित 'डवलपमेंट डायलॉग विद नीति आयोग' कार्यक्रम में नीति आयोग के सदस्यों और अधिकारियों को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि राज्य को विरासत में मिलती आ रही समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए हम योजनाओं के निर्माण और क्रियान्विति में आयोग का मार्गदर्शन लेकर आगे बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री ने नीति आयोग द्वारा देश के सर्वसमावेशी और सर्वांगीण विकास के लिए 15 वर्ष तक की दूरदर्शी रणनीति बनाने के लिए केन्द्र और राज्य के बीच सहयोग से तैयार किए जा रहे तीन साल के एक्शन एजेंडा की सराहना की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सर्विस डिलीवरी, प्रशासन तंत्र में सुधार और बेहतर समन्वय में नीति आयोग की सहभागिता से न केवल हम राजस्थान का तेजी से विकास करेंगे, बल्कि दूसरे राज्यों के लिए भी एक उदाहरण बन सकेंगे। श्रीमती राजे ने राज्य सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि राजस्थान ने मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के रूप में ?सी महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है जो राज्य का भविष्य सुरक्षित करने का काम करेगी। अभियान के पहले दो चरणों में 3500 तथा 4200 गांवों और लगभग 70 शहरों में वर्षाजल संग्रहण के ढ़ांचे बनाकर पानी को सहेजने की सफल क्रियान्विति की गई है। इस अभियान के परिणाम स्वरूप कई क्षेत्रों में भूजल स्तर तथा हरियाली क्षेत्र बढ़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब अभियान के तीसरे और चौथे चरण में 6000 से अधिक गांवों में जल संग्रहण ढ़ांचे बनाए जाएंगे। उन्होंने इसके लिए केन्द्र सरकार से 3000 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता के साथ-साथ पर्यावरण मंत्रालय के ग्रीन क्लाइमेट फण्ड से भी धनराशि आवंटन के लिए नीति आयोग से समर्थन की मांग की।

किसानों के लिए दुर्घटना बीमा की राशि 6 लाख से बढ़ाकर 10 लाख की जाएगी

जयपुर। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने कहा है कि किसानों को व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा लाभ 6 लाख से बढ़ाकर 10 लाख रूपये किया जाएगा तथा अब किसान के साथ में उसकी पत्नी को भी योजना शामिल कर उसे भी लाभान्वित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बिना ब्याज पर ऋण बांटने में प्रदेश देश में अग्रणी है। किसान बिना ब्याज पर फसली ऋण समय पर प्राप्त करे तथा उसे सही समय पर चुकाएं। ताकि उन्हें इस योजना का पूरा लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि समिति में मिनी सुपर मार्केट प्रारम्भ करने का प्रयास करें ताकि गांव में ही उच्चगुणवत्तापूर्णवस्तुएं एवं उत्पाद सुलभ हो सकें। सरकार की तरफ से इस संबंध में हर संभव मदद दी जाएगी। सरकार किसानों की सहुलियत के लिए 7.10 प्रतिशत की ब्याज दर पर दीर्घ कालीन कृषि ऋण भी दे रही है।

सम्पादकीय

किसानों के लिए ठोस उपाय जरूरी

ऐसे वक्त में जबकि देश के किसान लगातार अपनी उपज की बिक्री से होने वाली प्राप्तियों से असंतुष्ट होकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और कर्ज माफी की मांग कर रहे हैं, सरकार ने वर्ष 2017 की खरीफ फसल के लिए जो मूल्य नीति तय की है वह उनकी दिक्कतों को और बढ़ा सकती है। प्रमुख खरीफ फसलों के लिए जो नया न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय किया गया है उसकी केंद्र सरकार द्वारा औपचारिक घोषणा करने के बजाय उसके बारे में राज्यों को सूचित कर दिया गया है। यह पिछले सत्र से मामूली ही ज्यादा है। ज्यादा बुरी बात यह है कि मोटे तौर पर कपास, मूंग और सूरजमुखी बीज आदि के लिए घोषित एमएसपी खेती में होने वाले वास्तविक व्यय से भी कम है। यह अनुमान कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के आकलन पर आधारित है। जाहिर सी बात है कि किसानों को आने वाले मौसम में विशुद्ध घाटे का सामना करना होगा। हां, तुअर और उड़द की दाल अवश्य अपवाद हैं लेकिन अन्य तमाम फसलों में मुनाफे का प्रतिशत बहुत कम होगा। यह बमुश्किल 2 से 4 फीसदी होगा। एमएसपी में इतनी मामूली बढ़ोतरी से किसानों का गुस्सा शांत होगा या और बढ़ेगा? ऐसा इसलिए भी है क्योंकि कृषि उपज का सकल मूल्य भी बीते कई वर्षों से लगातार गिर रहा है। राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के 2017 के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2011-12 और 2015-16 के बीच अनाज और दालों का मूल्य 3 प्रतिशत गिरा। जबकि तिलहन में 13 फीसदी और चीनी में 1 फीसदी की गिरावट आई। फलों, सब्जियों और मसलों की बात करें तो ये ही ऐसी फसलें है जिनका मूल्य बढ़ा। हालांकि इन समूहों में भी कुछ मसलन प्याज, आलू और टमाटर के दाम गिरे। इसके चलते कई बार उन्होंने अपनी फसल यूंही फेंक दी। स्पष्ट है कि किसानों की बीज, उर्वरक, कीटनाशक और श्रम की लागत में कीमतों की तुलना में कहीं तेज इजाफा हुआ है। गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे कुछ राज्यों ने नकद सब्सिडी की शुरुआत की लेकिन नुकसान की समुचित भरपाई नहीं हो सकी। इसलिए आश्चर्य नहीं कि देश के अलग-अलग राज्यों के किसान सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी से यह मांग कर रहे हैं कि वह अपने चुनाव पूर्व वादे को निभाए और न्यूनतम समर्थन मूल्य को वास्तविक लागत से कम से कम 50 फीसदी ज्यादा तय करे। एम एस स्वामीनाथन की अध्यक्षता वाले राष्ट्रीय किसान आयोग ने भी यही अनुशंसा की थी। उसने कहा कि कृषि में होने वाली प्रगति का आकलन किसानों की आय में होने वाले इजाफे के आधार पर किया जाना चाहिए न कि उपज में होने वाली बढ़ोतरी के आधार पर। धान और गेहूं को छोड़ दिया जाए तो न्यूनतम समर्थन मूल्य अब तक किसानों के हित में अप्रभावी ही रहा है। बाजार में हस्तक्षेप करने वाले मूल्य समर्थन को अन्य फसलों पर भी लागू करके देखा जाना चाहिए। हालांकि उसके पहले यह सुनिश्चित करने वाले कदम उठाने होंगे कि यह प्रभावी और सफल साबित हो। नीति निर्माताओं को खेती किसानी के काम को लाभप्रद बनाए रखने के लिए अन्य तरीके भी तलाश करने होंगे। ऐसा ही एक तरीका हो सकता है मूल्य अंतर भुगतान व्यवस्था। यह विचार नीति आयोग के कार्य बल का है। इसमें उपज का आधार मूल्य तय करते हुए कहा गया है कि बाजार में अगर उपज इससे कम मूल्य पर बिकती है तो दोनों के बीच के अंतर की भरपाई की जानी चाहिए। चूंकि इस व्यवस्था में सरकारी खरीद का विकल्प नहीं है इसलिए इसे सभी फसलों पर आजमाया जा सकता है और बिना कोई अतिरिक्त भंडारण किए तमाम इलाकों में परखा जा सकता है। शुरुआत में इसे कुछ हिस्सों में प्रायोगिक तौर पर आजमाना चाहिए।

अजीतपुरा में खुली गिर नस्ल की देशी गायों की डेयरी

सीकर (विसं)। करीब 200 बीघा में तैयार ओलिटा डेयरी फार्म एंड ब्रीड डवलपमेंट एंड रिसर्च सेंटर अजीतपुर अन्य डेयरियों से बिलकुल अलग होगा। यहां देशी नस्ल की गायों के दूध को बिना खुले वातावरण के संपर्क के कागज की पैकिंग में पैक करके जयपुर दिल्ली सप्लाई किया जा रहा है। इस दूध से क्रीम नहीं निकाली जाएगी। गायों के नहाने के लिए शॉवर, ऑटोमेटिक मशीन मसाज, दूध निकालने के लिए पार्लर बनाया गया है। वहीं गायों को उनकी आवश्यकतानुसार पोष्टिक तत्व जैसे विटामिन, कैल्सियम, मिनरल्स भी मशीनों से नाप कर दिए जा रहे हैं।

सीकर के अजीतपुरा गांव के राकेश पिलानिया और धर्मपाल गढ़वाल ने गिर नस्ल की गायों का डेयरी फार्म खोला है। उनका दावा है कि देशी गायों का इस प्रकार का अत्याधुनिक डेयरी प्लांट देश में पहला है। इस डेयरी फार्म से आसपास के करीब 500 किसानों ग्रामीणों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। आसपास के किसानों को गिर नस्ल की गाएं भी दी जाएंगी और उनका दूध अच्छे दाम पर डेयरी ही खरीदेगी। डेयरी फार्म का उद्घाटन कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी और सांसद सुमेधानंद सरस्वती ने किया। धर्मपाल गढ़वाल और राकेश पिलानिया ने बताया कि फिल्म कलाकार अमिताभ बच्चन और मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर सहित मुंबई की कई हस्तियों को पूना के एक डेयरी प्लांट प्राइड ऑफ काऊ से दूध सप्लाई किया जाता है। यह डेयरी फार्म भी बहुत ही अत्याधुनिक हाइजिनिक है जिसमें दूध वायु के संपर्क के बिना पैक करके बेचा जा रहा है।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार से 24 से 26 मई तक कोटा में आयोजित ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे कृषि मंत्री प्रभुलाल से सैनी की उपस्थित में एमओयू किया है। इसमें कुल 21 एमओयू और डेयरी प्रोजेक्ट का एक ही एमओयू हुआ है। पूरे प्रोजेक्ट का खर्चा 40 करोड़ रुपए है इसमें प्रारंभ में 8 करोड़ रुपए खर्च किए हैं।

वर्षा जल संरक्षण द्वारा फसलोत्पादन

प्रकाश महला, गंगाराम, डॉ. ओ.पी. गढ़वाल, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर

वर्षा जल संरक्षण: राजस्थान राज्य भूगर्भीय जल की कमी वाला राज्य है। देश के कुल क्षेत्रफल का 10.5 प्रतिशत भाग राजस्थान राज्य में स्थित है। परन्तु देश के कुल जल संसाधन का मात्र एक प्रतिशत ही राज्य में उपलब्ध है। उपलब्ध जल संसाधनों का अधिक से अधिक दोहन करने पर भी 32 प्रतिशत कृषि योग्य क्षेत्र में ही सिंचाई हो पाती है। अनियमित और अपर्याप्त वर्षा के कारण निरन्तर अकाल की स्थिति राज्य में किसी न किसी क्षेत्र में बनी रहती है तथा सिचाई हेतु जल सीमित मात्रा में उपलब्ध हो पाता है। भूमिगत जल स्तर प्रतिवर्ष घटता जा रहा है। राज्य में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या तथा औद्योगीकरण के कारण जल की मांग बढ़ती जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में इस बहूमूल्य वर्षा जल संसाधन का संरक्षण एवं कुशल उपयोग कर अधिक क्षेत्र में सिंचाई करके प्रति इकाई जल से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

वर्षा जल संग्रहण की विधियाँ:-

वर्षा जल को भूमि संग्रहित करने हेतु निम्न क्रियाएं अपनाई जानी चाहिए

-गर्मी में खेत की गहरी जुताई करना।

-खेत का पानी खेत में रहे इस हेतु खेत के चारों तरफ मेड़बंदी करना।

-भूमि को समतल रखना।

कृत्रिम आवरण:- (वाष्पीकरण से नष्ट होने वाली नमी के बचाने हेतु जैसे मल्चिंग (पलवार) आदिवाली, ढालवाली भूमि में कन्टुर बॉडिग करावें जिससे नमी संरक्षण अधिक होगा (1-2 प्रतिशत ढाल)

- वैदिकाओं का निमार्ण अधिक ढ़ाल वाली भूमि में तथा सीढ़ी नुमा पट्टियों में परिवर्तित कर नमी संरक्षण किया जाता है। सीढ़ियां चबूतरे के रूप में बनाई जाती है (8-10 प्रतिशत ढ़ाल)

वर्षा जल संचयन एवंकृत्रिम पुर्नभरण हेतु अपनाई जाने वाली संरचनाएं:-

(अ) खेततलाई/ फार्मपौण्ड: चिकनी मिट्टी वाले क्षेत्रों में वर्षा जल का खेत से बहकर जाना एक सामान्य बात है। खेत के व्यर्थ बहते वर्षा जल को ढलान वाले काने में एक खेत तलाई का निर्माण कर एकत्रित कर सकते है। जिससे फसल को जीवन रक्षक सिंचाई दी जा सके।

(ब) नाडी या तालाब: यह मिट्टी का एक बांध है जो कि छोटे एवं मध्यम आकार के नालों में बनाया जाता है उस पर पत्थर की पिचिंग की जाती है। एकत्र पानी का उपयोग पशुओं के पीने, भूजल भरण से कुओं एवं नलकूपों की सिंचाई क्षमता में वृद्धि एवं खरीफ में ली जाने वाली फसलों एवं वानिकी पौधों में सिंचाई हेतु उपयोग किया जा सकता है।

(स) खडीन: यह एक मिट्टी का बांध है जो कि कम ढ़लान वाले खेतो जहां कि मिट्टी मध्यम एवं भारी है वहां ढ़लान के विपरीत दिशा में बनाया जाताहै। वर्षा का पानी अधिक ढ़लान वाली जमीन से बहकर खेत में जमा हो जाता है पानी के भराव के अनुसार खडी न कि डूब क्षेत्र में खरीफ एवं रबी की फसलें ले सकते हैं।

(द) एनीकट: यह एक पक्का ढ़ांचा होता है। एनीकट क्षेत्र में नाले के अन्तिम छोर के उस स्थान पर बनाया जाता है जहां कम से कम लागत में अधिक पानी एकत्र किया जा सके। गहरी तथा सकरी घाटियां एनीकट निर्माण के लिये उपयुक्त रहती है।

सिंचाई जल का समुचित उपयोग:वर्षा जल संरक्षित तथा उपलब्ध जल का कुशलतम उपयोग किया जाना अत्यन्त आवश्यक है ताकि प्रति इकाई जल से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। यह देखा गया है कि हमारे यहां जल का कुशलतम उपयोग नहीं होता है। जिसके कारण 50-60 प्रतिशत पानी की हानि रिसाव एवं वाष्पीकरण से नष्ट हो जात है।

अत: जल के कुशलतम उपयोग हेतु निम्न विधियां कारगर सिद्व हुई है। इनके द्वारा पानी की बचत कर अधिक क्षेत्र में सिचाई की जा सकती है।

1. फव्वारा सिंचाई पद्धति
2. ड्रिप पद्धति (बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति)

फव्वारा सिंचाई पद्धति: इस विधि में खेत में पाइप लाइन बिछायी जाती है। इन पाइपो मे जगह-जगह आवश्यकतानुसार फव्वारे लगे होते हैं। इन पाइपों से अधिक दाब पर पानी प्रवाहित किया जाता है जो फव्वारों के रूप मे निकलकर खेत को नम कर देता है। यह विधि विशेष रूप से उबड़-खाबड़ एवं हल्की मृदा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।

फव्वारे विधि के लाभ

-यह विधि ढालु भूमियों के लिये उपयुक्त है जो आर्थिक स्तर पर समतल नहीं की जा सकती है

-पानी का कम मात्रा में उपभोग होता है।

-भूमि पर जल का समान वितरण होता है।

ड्रिप विधि: इस विधि में जल को पौधे के जड़ क्षेत्र में बूंद बूंद करके दिया जाता है। इस विधि में जल के वाष्पीकरण और अन्त: स्पन्दन द्वारा हानि नहीं होती है। यह विधि उसर बलुई मृदाओं तथा बाग बगीचों के लिये उपयोगी है। इस विधि में मृदा सतह के बीच पाइप लाइन बिछा दी जाती है। दाब के साथ पानी नोजल से बाहर निकलता है। जो भूमि को धीरे-धीरे नम करता है।

ड्रिप विधि के लाभ

-इसमें अतिरिक्त जल का दुरूपयोग नहीं होता है।

-इसमें 50-60 प्रतिशत जल की बचत हो जाती है।

-इसके द्वारा सिंचाई जल के साथ उर्वरक का भी प्रयोग किया जा सकता है

-यह विधि कम पानी वाले क्षैत्रों के लिए रामबाण है।

थाई नींबू के 300 पेड़ लगाए, हर सप्ताह एक क्विंटल पैदावार

डूंगरपुर। आंधप्रदेश से थाई नींबू की किस्म मंगवाकर कर सतीरामपुर में उगाई। देखरेख अच्छी की तो ये पेड़ बन गए। इनसे सप्ताह में एक क्विंटल नींबू की पैदावर कर अच्छा-खासा मुनाफा मिल रहा है। माइनिंग विभाग से ऑफिस सुपरीटेंडेंट पद से रिटायर्ड नरेश डामोर ने 4 साल पहले अपने खेतों में थाई नींबू लगाने की योजना बनाई। इन नींबू को लगाने के लिए तकनीकी विशेषज्ञ डायालाल पाटीदार और हिनायतभाई को आंधप्रदेश में प्रशिक्षण दिलाया। इसके लिए उसने आंधप्रदेश से थाई नींबू के 300 बीज मंगवाकर खेतों में लगाए। चार साल से नींबू के इन पौधों में जैविक खाद दी गई। अब दो वर्ष बाद उन्हें थाई नींबू की उपज मिलने लग गई है। उन्होंने 5 बीघा जमीन पर नींबू के पौधे लगाए थे। अब उन्हें सप्ताह में लगभग एक क्विंटल तक नींबू मिल रहे हैं। ये नींबू प्रतिदिन उदयपुर, हिम्मतनगर और अहमदाबाद के शहरों में बेचे जा रहे हैं। नींबू की उपज पूरे सालभर मिल रही है। इससे उन्हें सालभर लाभ मिलता रहता है।

थाईनींबू की विशेषता : कागजी और सामान्य नींबू के मुकाबले थाई नींबू साइज में तीन गुना बड़ा होता है। इसमें रस और स्वाद अच्छा होता है। थाई नींबू का विशेष उपयोग सलाद, सजावट और जूस में होता है। इसकी सबसे ज्यादा मांग होटल और रेस्तरा में होती है। जैविक किस्म का नींबू होने के कारण यह अपने गुण को लेकर महंगा बिकता है।

बैंगन के एकीकृत कीट व निमेटोड, सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए रणनीतियां

रामनारायण कुम्हार, श्रवण कुमार,
शर्मिष्ठा ठाकुर, मेघराज मीणा, मधु बाला,
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

प्राकृतिक शत्रु (लाभकारी कीड़े)

सब्जियों में बैंगन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है और देश भर में बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। इसके उत्पादन में प्रमुख कमी, कीटों, रोगों और नेमाटोड में वृद्धि के रूप में की गयी है, जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी उपज में बहुत घाटा होता है। इसकी नरम और कोमल प्रकृति तथा उच्च नमी और लागत के क्षेत्रों के अधीन इसकी खेती के कारण, बैंगन पर कीट हमले का खतरा अधिक होता है और एक अनुमान के अनुसार कम से कम 35-40प्रश. का नुकसान होता है।

कीटनाशकों के अधिक उपयोग से संबंधित समस्याएं: इन कीटों के कारण होने वाले नुकसान को कम करने के लिए बैंगन पर कीटनाशक की एक बड़ी मात्रा का प्रयोग किया जाता है जो सब्जियां कम अंतराल पर काटी जाती हैं उनमें टाले न जा सकने वाले कीटनाशक के अवशेष उच्च स्तर पर बाकी रह सकते हैं जो उपभोक्ताओं के लिए बेहद खतरनाक हो सकते हैं। रसायनों पर अत्यधिक निर्भरता से प्रतिरोध, पुनरुत्थान, पर्यावरण प्रदूषण और उपयोगी पशुवर्ग और वनस्पति की तबाही की समस्या जनित हुई है।

प्रमुख कीट

माहू: वयस्क हल्के भूरे रंग के और कई काले धब्बों के साथ होते हैं, जबकि युवा पीले रंग के होते हैं। अंडे सिगार के आकार के, रंग में पीले और समूहों में पाये जाते हैं। युवा और वयस्क हरी पत्तियों को खुरचते हैं, हरा पदार्थ खाते हैं और पत्तियों को पूरी तरह से ढांचे में बदल देते हैं। माहू युवा और वयस्क पत्तों से रस चूसते हैं और प्रभावित पौधे पीले पड जाते हैं, विकृत हो जाते हैं और सूख जाते हैं। माहू भी मधुरस का रिसाव करते हैं जिस पर काली फफूंद लगती है, जो संश्लेषक गतिविधि को बाधित करती है।

तना और फल छेदक: आरंभिक चरणों में, लार्वा तने में छेद कर देते हैं जिससे विकास का बिन्दु मर जाता है। मुर्झाये, झुके हुए तने का दिखाई देना इसका प्रमुख लक्षण है। बाद में लार्वा फल में छेद कर देते हैं जिससे वह खपत के लिए अयोग्य हो जाता है।

क्या करें और क्या न करें

क्या करें

-समय पर बुवाई
-खेत की स्वच्छता
-हमेशा ताजा तैयार किये गये नीम के बीज के गूदे का सत्व उपयोग करे
-केवल जब आवश्यक हो तभी कीटनाशकों का उपयोग करें
-खपत से पहले बैगन के फल को धोएं

क्या न करें

-कीटनाशक की अनुशंसित खुराक से ज्यादा नहीं डालें
-एक ही कीटनाशक लगातार नहीं दोहराएं
-कीटनाशकों के मिश्रण का प्रयोग न करें
-सब्जियों पर मोनोक्रोटोफॉस जैसे अत्यधिक खतरनाक कीटनाशक का प्रयोग नहीं करें
-कटाई से ठीक पहले कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करें
-कीटनाशकों के प्रयोग के बाद 3-4 दिन तक सब्जी का उपयोग नहीं करें

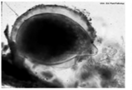

लाल मकड़ी: लार्वा, युवा और वयस्क पत्तियों की निचली सतह को खाते हैं। प्रभावित पत्तियां धीरे-धीरे मुड़ना शुरु हो जाती हैं और अंत में झुर्रीदार हो जाती हैं।

सूत्रकृमि (निमेटोड)

जड़ग्रंथि - मेलाइडोगाइनी:

सूत्रकृमि को सामान्य रूप से गोलकृमि या ईलवर्म के नाम से जाना जाता है। इसे अंग्रेजी में नेमाटोड कहते हैं। सूत्रकृमि का शरीर लम्बा, बेलनाकार, खंडहीन, कृमिरूप या कृमि-सदृश और दोनों सिरों पर पतला होता है। पादप परजीवी सूत्रकृमि 0.2 मि.मी. तक लम्बे तथा 0.05 मि.मी. व्यास के अर्ध पारदर्शक एवं सूक्ष्मदर्शीय होते हैं। ये भूमि में बहुतायात से पाये जाते हैं। इनकी अनेक जातियां विभिन्न प्रकार के पौधों की जड़ों से भोजन ग्रहण करती है। जड़ग्रंथि, सूत्रकृमि जड़ों अथवा भूमिगत कंदों के परजीवी होते हैं। यह आर्थिक महत्व की अनेक फसलों, विशेषकर कुकुरबिटस कुल एवं सब्जियों की क्षति के लिए उत्तरदायी है। इन्हें कृषि फसलों की प्रथम श्रेणी का सूत्रकृमि माना गया है। यह सूत्रकृमि भारी मृदाओं की अपेक्षा हल्की एवं मध्यम मृदा में ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। लगभग सभी सब्जियों में इस सूत्रकृमि द्वारा 21 से 60 प्रतिशत तक उपज में हानि होती है।

रोग के लक्षण:

-रोगग्रसित पौधों की वृद्धि रूक जाती है।

-पत्तियों में पीलापन,मुरझाना, पुष्प तथा फल बनने में देरी एवं फलों की संख्या एवं आकार में कमी आदि प्रमुख लक्षण है।

-पौधों की जड़ों में जहां सूत्रकृमि रहते हैं, वे फूल कर अनिष्चित आकार की ग्रंथियों में परिवर्तित हो जाती है।

-अधिक चौड़ी पत्तियों वाले पौधे, जैसे तम्बाकू या खीरा वर्ग के पौधों में दिन के समय मुरझान/म्लानि के लक्षण देखे जा सकते है।

रोग से क्षति

-मूल-ग्रंथि सूत्रकृमियों के आक्रमण से पौधों में जल एवं पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है तथा अनेक कन्द मूल फसलें, जैसे हल्दी, अदरक, आलू आदि कुरूप एवं विकृत हो जाती है जिससे उनका विक्रय मूल्य घट जाता है।

-यह पौधों के मूलाग्रों को नष्ट कर देता है। जिससे पौधा जल व पौषक तत्व अवषोषित नही कर सकता है।

-मूलग्रंथि सूत्रकृमियों के प्रकोप के कारण पौधे दूसरे रोगजनकों के लिए रोगग्राही हो जाते हैं।

एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीतियां

नर्सरी की स्थापना

-अच्छी जल निकासी हेतु हमेशा जमीनी स्तर से 10-15 सेमी ऊपर नर्सरी तैयार करें।

-जून के दौरान तीन हफ्तों के लिए नर्सरी बेड को धूप संशोधन करने के लिए 45 गेज (0.45 मिमी) की पॉलिथीन शीट से ढंक दें जिससे मिट्टी के कीड़े, जीवाणु जनित उक्टा तथा सूत्रकृमि जैसी बीमारियों को कम करने में मदद मिलेगी। हालाँकि, ध्यान रखा जाना चाहिए कि धूप संशोधन करने के लिए मिट्टी में पर्यास नमी मौजूद हो।

-तीन किलो सड़ी गोबर की खाद में 250 ग्राम ट्राइकोडर्मा विराडी मिलाकर पौधों के संवर्धन के लिए लगभग सात दिनों के लिए छोड़ दें। सात दिनों के बाद मिट्टी में 3 वर्ग मीटर के बेड में मिला दें।

-बुवाई से पहले, बीज को ट्राइकोडर्मा विराडी 4 ग्राम ध्किलोग्राम बीज की दर से उपचार किया जाना चाहिए।

-निराई-गुड़ाई समय-समय पर की जानी चाहिए और संक्रमित पौधों को नर्सरी से बाहर कर देना चाहिए।

एकीकृत कीट व नेमाटोड प्रबंधन

-गर्मियों में (मई-जून) 10-15 दिन के अन्तराल पर 2-3 गहरी जुताई करें।

-डेल्टा और पीले चिपचिपे जाल 2-3 प्रति एकड की दर से टिड्डे, माहो और सफेद मक्खी आदि के लिये स्थापित किये जाने चाहिये।

-नीम, महुआ आदि के बीजों की खली को 100 कि./हे. की दर से मिट्टी में मिलाने से इस सूत्रकृमि की संख्या को कुछ सीमा तक कम किया जा सकता है।

-बीजों को जैव कारक (ट्राईकोडर्माविरिडी/ पेसिलोमाइसिस लिलासिनस/ स्युडोमोनास फ्लोरेसेन्स 10 ग्राम/ किलो.) अथवा रसायन (एसीफेट 2 प्रतिशत/मिथोमिल 1 प्रतिशत भार/भार) से उपचारित करें।

-तना छेदक के संक्रमण को कम करने के लिये, नीम के तेल (2प्रश.) का प्रयोग सहायक होता है। यदि टिड्डे और अन्य चुसने वाले कीटों का संक्रमण अब भी निर्धारित संख्या से ऊपर हो, तो प्रति हेक्टेयर 150 मि.ली. की दर से इमिडाक्लोप्रिड 17.8एस.एल. का प्रयोग करें।

-तना एवं फल छेदक,ल्यूसिनोड्स ओर्बोनालिस की निगरानी और बड़े पैमाने पर उन्हें फंसाने के लिए 5 प्रति एकड़ फेरोमोन ट्रैप स्थापित किये जाने चाहिए। हर 15-20 दिन के अंतराल पर उन्हें ललचा कर आकर्षित करने का चारा बदलें।

-यदि तना एवं फल छेदक का प्रभाव निर्धारित संख्या से अधिक हो जाये, तो 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से साइपरमेथ्रिन ईसी(0.005प्रश.) या 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से कार्बराइल 50डब्ल्यूपी या 0.07प्रश. की दर से एंडोसल्फान 35 ईसी.डालें।

फायदे का सौदा बनी हरी मिर्च की खेती

श्रीगंगानगर (विसं)। शहर के आसपास एवं नाली (घग्घर फ्लड एरिया) में यूं तो सब्जी उत्पादक किसान अब काफी विशेषज्ञ एवं प्रगतिशील हो गए हैं। छोटी जोत वाले अनेक किसान सब्जियों का अच्छा उत्पादन लेकर अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। मात्र दो-चार बीघा भूमि से लाखों रुपए की सब्जियों की फसल लेना और मेहनत करना कोई यहां के किसानों से सीखे। इन दिनों खेतों में सुबह शाम हरी मिर्च की तोड़ाई और दोपहर में छंटाई का काम हो रहा है। चक 2 में नरेंद्र घणघस, जगदीश जलंधरा, मनमोहन शर्मा आदि के हरी मिर्च के खेत दिखाई देते हैं। इन खेतों से खेत मालिक प्रति बीघा एक से डेढ़ लाख रुपए की आमदनी ले रहे हैं। कुछ मेहनतकश किसान ज्यादा उपज भी कर रहे हैं। यहां की हरी मिर्च पंजाब के फिरोजपुर, फाजिल्का, मुकसर जिलों के अलावा पंजाब के बड़े शहरों एवं राजस्थान के कई हिस्सों में जाती है।

सब्जियों की खेती फायदेमंद: श्रीगंगानगर के आसपास के किसानों ने नरमा, कपास, सरसों, गेहूं चना, जौ आदि की बुआई बहुत कम कर दी है। जिले में इस बार नहरी पानी के संकट के बावजूद 5 हजार बीघा में सब्जियों की बुआई हुई है। इसमें से लगभग 500 बीघा में हरी मिर्च की उपज ली जा रही है।

8-10बार हो जाती है तोड़ाई : मिर्च एक बार लगाने के बाद 8 महीने की फसल है। इस दौरान 8 से 10 बार तोड़ाई की जाती है। जगदीश के खेत में मात्र दो बीघा हरी मिर्च है। उसने नवंबर के मध्य मिर्च का अच्छा हाईब्रिड बीज खरीदकर बुआई की। मध्य फरवरी में इसकी पौध को खेत की गहरी जुताई कर डीएपी खाद डालकर ट्रांसप्लांट कर दी गई। इसके अगले महीने से उपज देने लगी। जगदीश अब तक खेत से मिर्च की 4 बार तोड़ाई कर चुके। प्रति तोड़ाई 13 से से 18 क्विंटल प्रति बीघा हो रही है।

स्वामी केशवानंद राजकीय कृषि विवि बीकानेर के निदेशक डॉ. बीएस यादव के अनुसार लो टनल टेक्नोलॉजी से हमने कृषि अनुसंधान केंद्र श्रीगंगानगर में हरी मिर्च, टमाटर आदि की बेहतरीन उपज लेकर पानी की तीन-चौथाई बचत की है। किसानों को वाटर मैनेजमेंट में लो टनल टैक्नोलॉजी अपनानी चाहिए।

अशोक जैन ने मुख्य सचिव का पदभार संभाला

जयपुर (कासं)। भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी अशोक जैन ने शासन सचिवालय स्थित मुख्य सचिव कार्यालय में ओ.पी.मीना से मुख्य सचिव पद का पदभार ग्रहण किया। उल्लेखनीय है कि जोधपुर जिले के मूल निवासी अशोक जैन 1981 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं।

जैन इससे पूर्व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग में अतिरिक्त मुख्य सचिव थे ।

खरीफ के लिए राज्य में आठ लाख क्विंटल बीजों की मांग

जयपुर। मानसून की बारिश होने के साथ ही खेतों में हलचल शुरू हो गई है। सिंचित क्षेत्र में मूंग, मूंगफली आदि की बुआई शुरू हो चुकी है। इस बीच सरकार ने भी किसानों के लिए खाद-बीज के विशेष इंतजाम किए हैं। सभी जिलों में खाद-बीज सुलभ कराने के लिए लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। कृषि विभाग में संयुक्त सचिव डॉ. रामगोपाल शर्मा ने बताया कि किसानों को सभी तरह की फसलों के उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग करने की सलाह दी जा रही है। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्म के बीजों के साथ उनको उपचारित करना भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि राज्य में बीजों की मांग 8 लाख क्विंटल आंकी गई है, जबकि राज्य में सरकारी निजी स्तर पर विकसित बीज 8 लाख 63 हजार 346 क्विंटल की मात्रा में उपलब्ध कराया गया है। इसमें निजी क्षेत्र के बीज की मात्रा 4.63 लाख क्विंटल है।

दोमट मिट्टी वाली जमीन में होती है तिल की अच्छी फसल

जयपुर (कासं)। तिलहन के वर्ग में तिल की खेती को काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। तिल की अच्छी फसल लेने के लिए दोमट मिट्टी वाली भूमि का चयन ठीक रहता है। दूसरे शब्दों में कहें तो रेतीले क्षेत्र में तिल का उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक लिया जा सकता है। आमतौर पर तिल की बुआई 15 जून से 15 जुलाई के बीच सुविधानुसार कभी भी की जा सकती है। इसके लिए पहले अगर बारिश हो तो खेत में रोणी करना आवश्यक है। अगर मानसून की बारिश हो जाए तो एक-दो बार खेत की अच्छी प्रकार से जुताई कर भूमि तैयार कर लें। खेत में जल निकास का अच्छा प्रबंध हो और खेत में क्षारीयता या लवणीयता की समस्या नहीं होनी चाहिए।

तिल की फसल काफी संवेदनशील मानी जाती है। फसल होने के बाद उसकी कटाई और तिल के दाने हासिल करने में काफी मेहनत करनी होती है। अच्छे और अनुकूल खेत में प्रति बीघा तिल के आधा किलो बीज पर्याप्त हैं। ये बीज कतार से कतार की दूरी 30 सेमी रखते हुए भूमि में 4 से 5 सेमी तक गहराई में बीजें। बुआई से पहले इन बीजों को 2 ग्राम कार्बेंडेजाइम प्रति किलों की दर से उपचारित करें। जीवाणु अंगमारी रोग के प्रकोप से बचने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम 10 लीटर पानी में घोल बनाकर बीजों को 15 से 20 मिनट तक भिगोयें और छाया में सुखाकर बुआई करें। बुआई के 25 से 30 दिन बाद खरपतवार अवश्य निकाल दें। यदि समय पर बारिश हो तो फूल आते समय एक हल्की सिंचाई करना लाभदायक होता है। तिल की कटाई समय पर करना भी जरूरी है, वरना इसके बीज बिखरने की आशंका रहती है।

बीजों का चयन: कृषि विशेषज्ञों के अनुसार तिल के वैसे तो कई उन्नत बीज हैं, लेकिन इन दिनों प्रचलन में 4-5 किस्में हैं। इनमें आरटी 46, आरटी 125, आरटी 127, आरटी 346, आरटी 351 शामिल हैं। उन्नत कृषि विधियां अपनाकर प्रति बीघा 1.5 से 2 क्विंटल तक पैदावार ली जा सकती है।

उर्वरक: तिल के लिए प्रति बीघा 10 किलोग्राम नाइट्रोजन और 8 किलोग्राम फास्फोरस का प्रयोग पर्याप्त है। बुआई पर 11 किलो यूरिया और 50 किलो सिंगल सुपर फास्फेट मिलाकर ड्रिल करें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा के लिए 11 किलो यूरिया बुआई के 4 या 5 सप्ताह बाद डालें।

सात जिलों के किसान खेती की नई तकनीक देखने जाएंगे दिल्ली

धौलपुर (विसं)। कृषि के क्षेत्र में धौलपुर जिले के किसान जागरुक होकर खेतीबाड़ी बागवानी में नवाचार अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ाने में जुटे हैं। ऐसे में राज्य सरकार की ओर से कृषि की नई टेक्नोलॉजी सिखाने के मकसद से किसानों को नई दिल्ली में विजिट कराया जा रहा है। इसके लिए प्रदेश के चुनींदा 7 जिलों के किसानों को चुना गया है। इसमें धौलपुर के अलावा करौली, जयपुर, अलवर, कोटा, प्रतापगढ़ बूंदी के प्रगतिशील किसान शामिल हैं। इन किसानों का दल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में 16 से 18 जुलाई तक आयोजित होने वाले कृषि उन्नति मेला 2017 में भाग लेगा। यह बताना जरूरी है कि हॉर्टिकल्चर में जिले में नींबू, किन्नू, अमरूद आम आदि की बागवानी में यहां का किसान रुचि ले रहा है। बसेड़ी के खेमरी में सेंटर ऑफ एक्सीलेंसी में आम की कई वैरायटियां तैयार की जा रही हैं।

दलहन का बुआई रकबा 25 प्रश. घटाया मोटे अनाज तिलहन का बढ़ाया

जयपुर (कासं)। इस बार प्रदेश में 162 लाख 16 हजार हैक्टेयर भूमि पर खरीफ फसलों की बुआई की जाएगी। यह पिछले साल के मुकाबले 2 लाख हैक्टेयर कम है। पिछले साल 164 लाख 16 हजार हैक्टेयर में खरीफ की बुआई हुई थी। कृषि विभाग की ओर से इस बार तय किए गए लक्ष्यों में दलहन की बुआई का रकबा करीब 25 फीसदी कम किया गया है। वहीं मोटे अनाज तिलहन का रकबा बढ़ाया है। खरीफ में मुख्य रूप से मोटे अनाज में चावल, ज्वार, बाजरा मक्का आदि, दलहन में मूंग, मोठ, उड़द, चौला अरहर, तिलहन में मूंगफली, तिल, सोयाबीन अरंडी और अन्य फसलों में गन्ना, कपास ग्वार आदि की बुआई की जाती है।

इस बार कृषि विभाग ने ज्वार, बाजरा मक्का की बुआई का रकबा बढ़ाया है, वहीं चावल का रकबा कम किया है। पिछले साल 58 लाख 57 हजार हैक्टेयर में मोटे अनाज की बुआई की गई थी। इस बार 63 लाख 5 हजार हैक्टेयर में बुआई का लक्ष्य तय किया है। अरहर को छोड़कर सभी तरह के दलहन का बुआई रकबा घटाया गया है। पिछले साल के मुकाबले मूंग का रकबा 21 लाख से घटाकर 14 लाख, मोठ का 14 लाख से घटाकर 12 लाख, उड़द का 5 लाख से कम कर 3 लाख चौले का 89 हजार से घटाकर 75 हजार हैक्टेयर किया गया है।

तिलहन में मूंगफली का रकबा कम किया गया है, लेकिन तिल, सोयाबीन अरंडी के बुआई रकबे को बढ़ाया गया है। पिछले साल 2.76 लाख हैक्टेयर में तिल की बुआई हुई थी, इस बार 4.50 लाख हैक्टेयर में तिल की बुआई का लक्ष्य तय किया गया है।

बाजरा : आरएचबी-173,एचएचबी-67-2, एचएचबी-197, एमपीएमएच-17, जीएचबी-744, आरएचबी-177, एचएचबी-226 और बायो 448(एमएच1671) बीज अधिसूचित और प्रमाणित बीज है। निजी कंपनियों के बीजों में बायो 448, धूम (बायो 8145), जेके बीएच 26, जेके 676, एमपी-7792, प्रोएग्रो-9444 और एमपी-1533 (केबीएच सुपरबॉस) प्रमुख हैं।

मक्का: एचक्यूपीएम-1,एचक्यूपीएम-5, प्रताप क्यूपीएम-1, पीईईएचएम-5, पीसी-3, गंगासेफड-2, डीएचएम-121, डीएचएम-117 और बायो 9682 बीज प्रमुख है। निजी कंपनियों द्वारा विकसित बीजों में एनएमएच-803, एनएमएच-920, एनएमएच-731, बायो 9544, बायो-9782, जेकेएमएच-1701, जेकेएमएच-175, एमएम-7725, केएमएच-3712, केएमएच-3426 प्रमुख हैं।

ज्वार: कृषि विश्वविद्यालयों में विकसित सीएसवी-23, सीएसवी-15, सीएसवी-20, सीएसवी-17 अधिसूचित और प्रमाणित है। निजी कंपनियों द्वारा विकसित बीजों में एनएसएच-54, जेकेएसएच-22 और जेके ज्योथि प्रमुख हैं।

मूंग: आईपीएम-2-14,आईपीएम-02-03, आरएमजी-492, जीएम-4, सत्या, एचयूएम-16, एमएच-125,पीडीएम-139, एमएच-421, एसएमएल-668 अधिसूचित और प्रमाणित बीज हैं।

उड़द: आईपीयू-2-43,पीयू-40, पीयू-31, टी-9, शेखर-2, शेखर-3, आजाद-3 प्रमुख बीज है।

मोठ: आरएमओ-257 सीएस प्रथम, आरएमओ-257 सीएस द्वितीय, काजरी-एम-2, आरएमओ-435 प्रमुख बीज हैं।

अरहर: टीजेटी-501,एलएएम-41, यूपीएएस-120, आईसीपीएल-85063, टीएस-3 आर, पंत अरहर-291 बीज प्रमुख हैं।

सोयाबीन: जेएस-95-60,जेएस-335, आरकेएस-24, जेएस-93-05 प्रमुख है।

मूंगफली: आरजी-382, आईसीजीवी-00350, के-1319, एचएनजी-10, टीजी-37ए, पीआरएम-1 (प्रताप मूंगफली-1) आईसीयूजी-92035, एचएनजी-69, आईसीजीवी-91114, टीजी-38, यूजी-5 (प्रताप राज मूंगफली), गिनर-2, आरजी-510 और के-6 प्रमुख श्रेणी के बीज हैं। f

तिल: आरटी-346,आरटी-351 और जीटी-3 प्रमुख बीज हैं।

अरंडी: जीसीएच-7प्रमुख बीज है।

ग्वार: आरजीसी-1066,आरजीसी-1038, आरजीसी-1017, आरजीसी-1055, एचजी-563, एचजी-2-3, एचजी-2-20 और एचजी-884 प्रमुख बीज है, जिनकी सिफारिश राज्य सरकार के कृषि विभाग की ओर से की गई है।

किसानों को बिना भूमि रहन रखे दिया जा रहा है ब्याज मुक्त फसली ऋणः किलक

अजमेर (विसं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने कहा कि प्रदेश के किसानों से बिना किसी कागजात एवं भूमि रहन रखे ब्याज मुक्त फसली ऋण प्रदान किया जा रहा है और अब तक 16 लाख से अधिक किसानों को 7 हजार करोड़ से अधिक का फसली ऋण बांटा जा चुका है। किलक अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के मौके पर अजमेर जिले की पंचायत समिति सिलोरा के ग्राम डिंडवाडा में ग्राम सेवा सहकारी समिति के 10 लाख रूपये की लागत से नवनिर्मित गोदाम के लोकार्पण एवं नए सदस्यों को ब्याज मुक्त फसली ऋण वितरण के समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसानों को सामाजिक सुरक्षा के तहत 6 लाख रुपये का दुर्घटना बीमा दिया जा रहा है और इस वर्ष 25 लाख से अधिक किसानों को इससे जोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में राज्य के 40 लाख किसानों को दुर्घटना बीमा योजना से जोड़ने के लिए कार्ययोजना तैयार की जा रही है। किलक ने कहा कि जो सहकारी समितियां अच्छा कार्य कर रही हैं, उनकों किसी प्रकार की समस्या आने नहीं दी जाएगी तथा ऐसी समिति के सदस्यों को और अधिक ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। किसान सदस्यों को सहकार किसान कल्याण योजना में दीर्घावधि के लिए 10 से 20 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। महिलाएं डेयरी क्षेत्र में आकर सहकारिता से जुड़ें तथा सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ परिवार का आर्थिक सशक्तिकरण भी करें। उन्होंने घोषणा की कि अराई क्रय-विक्रय समिति में गोदाम निर्माण, नई ग्राम सेवा सहकारी समिति का गठन एवं नई बैंक शाखा तथा डिंडवाडा ग्राम सेवा सहकारी समिति में मिनी सुपर मार्केट भी खोले जाएंगे। राज्य किसान आयोग के अध्यक्ष प्रो. सांवर लाल जाट ने कहा कि सहकारिता में गांव की संस्था गांव के लिए है जिससे गांव वालों का भला हो। उन्होंने कहा कि राजस्थान में सहकारिता के क्षेत्र में अच्छा कार्य हो रहा है। अब सहकारिता के एटीएम भी चालू हो गए हैं, जिससे पैसे के लेन देन की सुविधा गांव में ही उपलब्ध हो गई है। भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना लागू होने से किसानों को बहुत बड़ी राहत मिली है।

प्रदेश में पहली बार 70 हजार से अधिक किसानों से हुई 1.64 लाख मैट्रिक टन मूंग खरीद

किसानों को हुआ 862 करोड़ रुपये का भुगतान

जयपुर (विसं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि राज्य में पहली बार मूल्य स्थिरीकरण कोष के तहत समर्थन मूल्य पर 70 हजार 731 किसानों से 1 लाख 64 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग की खरीद कर लगभग 862 करोड़ रुपये का भुगतान काश्तकारों को कर दिया गया है। यह मूंग खरीद 74 केन्द्रों पर राजफैड, एफसीआई, नैफैड एवं तिलम संघ द्वारा की गई थी। किलक ने बताया कि 14 जिलों के 43 केन्द्रों पर राजफैड द्वारा सर्वाधिक 49 हजार 263 किसानों से 1.04 लाख मैट्रिक टन से अधिक मूंग की खरीद की गई। इन किसानों को 546.65 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया गया है तथा शेष 21 हजार 468 किसानों से एफसीआई, नैफैड एवं तिलम संघ ने 31 केन्द्रों के माध्यम से 60 हजार मैट्रिक टन मूंग की खरीद कर लगभग 312 करोड़ रुपये का भुगतान किया।

उन्होंने बताया कि राजफैड द्वारा जोधपुर जिले की 6 समितियों ने 15 हजार 582 किसानों से 35 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग की खरीद कर 185 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया है। पाली जिले की 3 समितियों ने 5 हजार 77 किसानों से 10 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग खरीद कर 52 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया। जबकि जैसलमेर की 3 समितियों ने 5 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग खरीद कर 30.34 करोड़ रुपये का भुगतान जिले के 2 हजार 80 किसानों को किया है। बीकानेर जिले की समिति ने 140 किसानों से 3 हजार 805 मैट्रिक टन मूंग की खरीद कर 1.98 करोड़ रुपये का भुगतान किया। इसी प्रकार नागौर जिले के 9 हजार 276 किसानों से 5 समितियों ने 25 हजार 932 मैट्रिक टन से अधिक मूंग की खरीद कर 135 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया। सीकर जिले की 2 समितियों ने 3 हजार 209 किसानों को 254 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया तथा इनसे 48 हजार 710 मैट्रिक टन मूंग की खरीद की। हनुमानगढ़ जिले की 6 समितियों ने 2 हजार 684 किसानों से 46 हजार 107 मैट्रिक टन से अधिक की मूंग की खरीद की तथा उन्हें इसके लिए 24.09 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया।

उन्होंने बताया कि झुंझुनूं जिले के 2 हजार 851 किसानों से 2 समितियों ने 33 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग खरीद कर 17.60 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया। जयपुर जिले के 2 हजार 137 किसानों से 2 समितियों ने 25 हजार मैट्रिक टन से अधिक मूंग खरीद कर लगभग 13.12 करोड़ रुपये का भुगतान किया। इसी प्रकार चूरू एवं अजमेर जिले की 3-3 समितियों ने क्रमशः 2 हजार 535 एवं 2 हजार 335 किसानों से 54 हजार 63 एवं 37 हजार 230 मैट्रिक टन मूंग की खरीद कर 28.24 करोड़ रुपये एवं 19.45 करोड़ रुपये का भुगतान किया है।

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति का कार्यभार डॉ. छीपा को

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कल्याण सिंह ने राज्य सरकार की सलाह से, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति पद का अतिरिक्त कार्यभार स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति डॉ. बी. आर. छीपा को दिये जाने के आदेश मंगलवार को जारी किये।

एक सीजन में 5 फसल, ताकि मिले ज्यादा मुनाफा

भीलवाड़ा (कासं)। किसान भूरालाल धाकड़ का खेती करने का तरीका आम किसानों से अलग है। खेत के अलग-अलग हिस्सों में 5 अलग-अलग फसल करते हैं। मक्का इस इलाके में खरीफ की मुख्य फसल है। इससे हटकर धाकड़ के खेत के दो-सवा दो बीघा हिस्सा में ही मक्का बुआई होगी। अन्य हिस्सों में वे कपास, रजका, सोयाबीन एवं मूंगफली की बुआई करवाएंगे। वे कहते हैं, किसी साल एक फसल में रोग-कीट लग जाए तो बाकी फसलें बची रहती हैं। यही स्थिति भाव में है। मक्का या सोयाबीन मंडी में सस्ती रहेगी तो कपास, मूंगफली से अच्छी आमदनी होने की उम्मीद रहती है। रजका केश क्रॉप की तरह है जो महीनेभर बाद से हरा चारा के रूप में आय देने लग जाता है। 11 बीघा खेत में कोई एक फसल लेने की स्थिति में जहां अधिकतम तीन-साढ़े तीन लाख की आय एक सीजन में होती है।

छह जिलों में 30 नई ग्राम सेवा सहकारी समितियों का हुआ गठन

जयपुर (कासं)। रजिस्ट्रार, सहकारिता रामनिवास ने बताया कि नए वित्तीय वर्ष में राज्य के 6 जिलों में 30 नई ग्राम सेवा सहकारी समितियों व बहु उदेश्यीय सहकारी समितियों का गठन किया गया है। इसके लिए स्वीकृति आदेश जारी कर दिए हैं। उन्होंने बताया कि चित्तौडगढ़ जिले में 18, उदयपुर में 5, नागौर, बाड़मेर एवं अजमेर में 2-2 तथा चुरू जिले में एक नई पैक्स का गठन किया गया है। रामनिवास ने बताया कि चित्तौडगढ़ जिले की 18 नई पैक्स गुडाखेडा, टाई, बडावली, धामंचा, सोमरवालों का खेडा, उंचा, मंगलवाड़, पीराना, रोलाहेडा, रेवलिया खुर्द, करूकडा, लालास, अभयपुर, जलिया, रावडदा, सुखवाडा, कूंथना एवं सादी में, उदयपुर जिले के रेवलिया खुर्द, चित्रावास एवं कमोल में नई पैक्स तथा जोधपुर खुर्द व अटाटिया में नई लैम्पस खोली गई हैं। इसी प्रकार बाडमेर जिले में बूठ जैतमाल व खारिया तला, नागौर जिले में बाडी घाटी व भैरूंदा, अजमेर जिले में पीपलाज व दौलतपुरा तथा चूरू जिले में भानीसरिया तेज में नई पैक्स का गठन किया गया है। इन सभी नई पैक्सों का गठन राज्य सरकार की नीति के अनुसार ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर किया गया है। नवगठित ग्राम सेवा सहकारी समिति के लिए स्थानीय ग्राम पंचायत प्रथम पांच वर्षों के लिए भवन तथा गोदाम निर्माण के लिए निःशुल्क भूमि भी उपलब्ध कराएगी। उन्होंने बताया कि 6 जिलों के केन्द्रीय सहकारी बैंकों को निर्देश दिए गए हैं कि समिति के गठन के उपरान्त समिति के आर्थिक स्वावलंबन के लिए सदस्यों में 2 से 2.5 करोड़ रुपये का ऋण वितरण किया जाए।

रबी विपणन वर्ष 2017-18
न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 12 लाख 38 हजार 163.10 मैट्रिक टन गेहूं की खरीद

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा रबी विपणन वर्ष 2017-18 अन्तर्गत न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अब तक प्रदेश में 12 लाख 38 हजार 163.10 मैट्रिक टन गेहूं की खरीद हो चुकी है। जिला रसद अधिकारी (उपार्जन) गौतम चन्द जैन ने बताया कि विभिन्न एजेसिंयों द्वारा 208 केन्द्रों पर गेहूं की खरीद की जा रही है जिनमें भारतीय खाद्य निगम द्वारा 9 लाख 72 हजार 236.45 मैट्रिक टन, राज्य सरकार की विभिन्न ऐजेंसियों द्वारा 2 लाख 65 हजार 926.65 मैट्रिक टन गेहूं की खरीद की गई है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीद 15 मार्च, 2017 से शुरू की गई थी जो 30 जून, 2017 तक की गई।

सहकारी बैंक सेवा के 469 अभ्यर्थियों की 8 एवं 9 जुलाई को होगी कम्प्यूटर दक्षता परीक्षा

जयपुर (कासं)। रजिस्ट्रार, सहकारिता राम निवास ने बताया कि राजस्थान सहकारी शिक्षा एवं प्रबंधन संस्थान (राईसेम) द्वारा अपेक्स बैंक एवं जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के 469 अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कम्प्यूटर दक्षता परीक्षा का आयोजन 8 एवं 9 जुलाई को किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह परीक्षा अपेक्स बैंक एवं जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के वर्ष 2014-15 में चयनित वरिष्ठ प्रबंधक, प्रबंधक, कम्प्यूटर प्रोग्रामर एवं बैंकिंग सहायक के लिए आयोजित की जा रही है। राम निवास ने बताया कि वरिष्ठ प्रबंधक, प्रबंधक, कम्प्यूटर प्रोग्रामर एवं बैंकिंग सहायक की 75 अंकों की लिखित परीक्षा 8 जुलाई को प्रातः 10 से 11.30 बजे तक तथा वरिष्ठ प्रबंधक, प्रबंधक एवं कम्प्यूटर प्रोग्रामर की 25 अंकों की प्रायोगिक परीक्षा दोपहर 1 बजे से 1.30 बजे तक आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि बैंकिंग सहायक की प्रायोगिक परीक्षा 9 जुलाई को 6 बैचों में प्रातः 9.30 से अपराह्न 3.30 के मध्य आयोजित होगी। निदेशक, राईसेम श्री शिव कुमार बाकोलिया ने बताया कि परीक्षा संबंधी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। परीक्षा झालाना संस्थागत क्षेत्र स्थित तीन केन्द्रों राईसेम, आईसीएम एवं सहकारी संघ पर आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थियों को परीक्षा में कम से कम 40 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि सभी अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र जारी कर दिए हैं। यदि किसी अभ्यर्थी को प्रवेश पत्र नहीं मिलता है तो उसे संबंधित बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से सत्यापित प्रवेश पत्र के आधार पर परीक्षा में प्रवेश दिया जाएगा।

तिलहनी एवं दलहनी फसलों में खरपतवार प्रबंधन

बजरंग लाल ओला, डॉ.- पी. सी. गढ्वाल एवं डॉ.- बी- एस- राठौड़
विषय विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, (भा.कृ. अ. प.-सरसों अनुसधान निदेशालय) गूंता, बानसूर, अलवर

खरीफ मौसम की उगाई जाने वाली प्रमुख तिलहनी एवं दलहनी फसलों में मूंगफली, सोयाबीन, तिल, अरण्डी, अरहर, मूंग, उड़द एवं ग्वार आदि है। किसान, उन्नत किस्म के बीज, उपयुक्त उर्वरक, नियमित सिंचाई तथा पादप सुरक्षा के विभिन्न उपाय जैसे उत्पादन तकनीकों को वैज्ञानिक विधि से अपनाकर कृषि से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने के अपने लक्ष्य में अब भी पूर्णतया सफल नहीं हो पा रहे हैं। इसका एकमात्र कारण है कि वे उन्नतशील साधनों को अपनाने के साथ-साथ खरपतवारों के नियंत्रण पर पूर्ण ध्यान नहीं देते। यदि किसान को अपनी प्रमुख तिलहनी एवं दलहनी फसलों से भरपूर उपज प्राप्त करनी है तो इन फसलों के शत्रु खरपतवारों पर नियंत्रण पाने के महत्व को समझकर उनको समय पर नष्ट करना होगा। खरपतवारों की उपस्थिति फसल की उपज को 35-37 प्रतिशत तक कम कर देते हैं।

निराई गुड़ाई: खरीफ मौसम की प्रमुख तिलहनी एवं दलहनी फसलों की अच्छी बढ़वार के लिए खरपतवारों को निकालनें के लिए निराई-गुड़ाई करें, इससें खरपतवार तो नष्ट होते ही है, साथ ही मिट्टी में हवा का संचार होता है और ऊपरी पपड़ी के टूटनें से नमी का संचार बढता है। वर्षा के अभाव में निराई-गुड़ाई वरदान से कम नहीं होती। यह खरपतवारों पर नियंत्रण पाने की सरल, प्रभावपूर्ण तथा उत्तम विधि है। फसलों की आरंभिक अवस्था बुवाई के 15-45 दिन के मध्य का समय खरपतवारों से प्रतियोगिता की दृष्टि से क्रांतिक समय है। परिणामस्वरूप, आंरभिक अवस्था में ही फसलों को खरपतवार से मुक्त करना फसल के लिये अधिक लाभदायक होता है। बुवाई के 20 दिनो के बाद ही खुरपी से पहली निंदाई करके खेत को खरपतवार रहित करना आवश्यक होता है, जिससे खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके। हाथ से खरपतवार निकालने की विधि तभी अपनाई जानी चाहिए जब क्षेत्रफल थोड़ा हो तथा श्रमिक आसानी से कम मूल्य पर उपलब्ध हो।

शाकनाशी रसायनों द्वारा: खरीफ मौसम की प्रमुख तिलहनी एवं दलहनी फसलों फसलों में शाकनाशी रसायनों का प्रयोग करके भी खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है। जहां समय एवं श्रमिक कम तथा पारिश्रमिक ज्यादा हो वहां इस विधि को अपनाने से प्रति हैक्टेयर लागत कम आती है तथा समय की बचत होती है। इस विधि को अपनाने से श्रम शक्ति भी कम लगती है तथा मुख्य फसल को भी हानि नहीं पहुंचती। यहां पर खरीफकी मुख्यफसलों में उगने वाले खरपतवारों को नष्ट करने हेतु निराई गुड़ाई एवं शाकनाशी रसायनों को उनकी मात्रा के साथ उचित समय पर उपयोग करने का वर्णन किया गया है

सोयाबीन: सोयाबीन में वर्षा के मौसम की फसल होने के कारण खरपतवारों की समस्या अधिक होती है। खरपतवारों के कारण उत्पादन में 30-70 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। खरपतवारों का नियन्त्रण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है। फ्लुक्लोरेलिन (45 ई.सी.) या ट्राईफ्लुक्लोरेलीन दवा की एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर (2.2 लीटर दवा) बुवाई से पहले या पेन्डीमिथेलीन (30 ई.सी) की 1 लीटर सक्रिय तत्व (3.3 लीटर दवा) या क्लोमोजोन 1 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बुवाई के बाद और अंकुरण से पहले या ईमाझाथापायर 75-100 ग्राम प्रति हैक्टेयर या क्विझालाफोप इथाईल 50 ग्राम प्रति हैक्टेयर बुवाई के 15-20 दिन बाद प्रयोग कर सकते हैं। इन रसायनों को 750-800 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। खरपतवार की दुबारा वृद्धि को नष्ट करने के लिए बुवाई के 30 और 45 दिन बाद गुड़ाई करनी चाहिए।

मूंगफली: अधिक पैदावार के लिए मूंगफली के खेत को 25 से 45 दिन की अवधि तक खरतपवारों से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए कम से कम दो बार निराई-गुड़ाई, पहली 20-25 दिन और दूसरी 40-45 दिन पर की जानी चाहिए। पेगिंग की अवस्था में निराई-गुड़ाई नहीं करनी चाहिये। श्रमिकों की समस्या होने पर फ्लूक्लोरेलिन (45 ई.सी.) दवा की एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर (2.2 लीटर दवा) की दर से 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के पूर्व छिड़काव कर भूमि में भली भांति मिला देना चाहिये अथवा पेन्डामिथेलीन (30 ई.सी) की 1 लीटर सक्रिय तत्व (3.3 लीटर दवा) को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के तुरन्त बाद (बुवाई के 24 से 48 दिन के अंदर) छिड़काव करना चाहिये।

अरण्डी: अरण्डी की फसल में खरपतवारों से काफी नुकसान होता है। पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे के बीच अधिक दूरी होने और साथ ही वे पौधों की शुरू में कम बढ़वार के कारण, अरंडी की फसल में खरपतवारों का बहुत अधिक प्रकोप होता है। अत: फसल की अच्छी बढ़वार और उपज के लिए यह आवश्यक है कि फसल को बुवाई के 25 से 45 दिन की अवधि तक खरतपवारों से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए 15-20 दिन के अन्तराल पर फसल की दोबार निराई-गुड़ाई करें। खरपतवारनाशियों के प्रयोग से भी खरतपवारों के प्रकोप को कम कर सकते हैं। इस फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लुक्लोरेलिन (45 ई.सी.) या ट्राईफ्लुक्लोरेलीन दवा की एक लीटर सक्रिय तत्व (2.2 लीटर दवा) प्रति हैक्टेयर बुवाई से पहले छिड़काव करें। इन रसायनों को 600-800 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें और छिड़काव के बाद रसायन को मिट्टी की ऊपर की परत में अच्छी तरह मिला दें। खरपतवार की दुबारा वृद्धि को नष्ट करने के लिए बुवाई के 30 और 45 दिन बाद गुड़ाई करनी चाहिए।

तिल: तिल की फसल में सामान्यतया दो निराई-गुड़ाई करने से खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। पहली निराई-गुड़ाई फसल बोने के 15 से 20 दिन के अन्दर करनी चाहिए। अगर खरपतवार अधिक हो तो बुवाई के 35 से 40 दिन के अंदर दूसरी निराई-गुड़ाई करें। निराई-गुड़ाई के लिए मजदूरों की कमी होने पर, तिल में एक कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से फ्लूक्लोरेलिन सक्रिय दवा को 400-500 लीटर पानी में घोलकर बुवाई से पहले खेत में छिड़कने से भी खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है। फसल बोने से पहले दवाई को सतही मिट्टी में मिला दें। फ्लुक्लारेलिन के अतिरिक्त एलाक्लोर (1.75 कि.ग्रा.) या पेण्डीमिथालिन (1 कि.ग्रा.) के प्रयोग से भी खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इन दोनों खरपतवारों का प्रयोग बुवाई के बाद 2-3 दिन के अंदर करें। दवाई को 400-500 लीटर पानी में घोल कर बराबर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार खरपतवारनाशी दवा के प्रयोग के साथ-साथ फसल की 20 से 30 दिन की अवस्था पर एक निराई-गुड़ाई भी करें।

अरहर: अरहर में बुवाई के 45-50 दिन तक खरपतवारों की रोकथाम करना आवश्यक होता है। इसके बाद फसल की बढ़वार जोर पकड़ लेती है और खरपतवार कोई विशेष हानि नहीं पहुँचा पाते। इस फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लुक्लोरेलिन (45 ई.सी.) एक लीटर सक्रिय तत्व (2.2 लीटर दवा) की मात्रा प्रति हैक्टेयर बुवाई से पहले छिड़काव करें। अथवा पेन्डामिथेलीन (30 ई.सी) की 1 लीटर सक्रिय तत्व (3.3 लीटर दवा) को बुवाई के बाद और अंकुरण से पहले 600-800 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें और छिड़काव के बाद रसायन को मिट्टी की ऊपर की परत में अच्छी तरह मिला दें।

उड़द : उड़द की फसल में खरपतवारों की समय पर रोकथाम करना अति आवश्यक है। इनकी रोकथाम के लिए बुवाई के 25 से 30 दिन के बाद सिंचाई के बाद से निराई व निकाई करके नियंत्रित किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर खरपतवारनाशी रसायनों का उपयोग कर सकतें है। खरपतवारनाशी पेन्डीमेथालीन 1 कि.ग्रा./हेक्टेयर का 400-500 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के बाद एवं अंकुरण से पूर्व करना चाहिए।

मूंग: फसल बोने के 35-40 दिन के भीतर खरपतवारों की सघनता के अनुसार एक या दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होती है। अथवा फ्लूक्लोरेलिन नामक दवाई को 1 लीटर प्रति है. की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर बवुाई से पहले छिड़काव करके तुरन्त भूमि की उपरी सतह में मिलाएं या पेन्डीमेथालीन 1 कि.ग्रा./है. रसायन को 500 ली. पानी में घोलकर बुवाई के 1-2 दिन बाद छिड़काव करे।

ग्वार: पहली निराई गुड़ाई पौधों के अच्छी तरह जम जाने के बाद एक माह में ही कर देनी चाहिये। गुड़ाई करते समय ध्यान रहे कि पौधों की जड़ें नष्ट न होने पायें। खरपतवार नियंत्रण खुरपी और खरपतवारनाशी रसायनों एवं हैण्ड हो आदि से किया जाता है । खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लूक्लोरेलिन (45 ई.सी.) दवा की एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर (2.2 लीटर दवा) की दर से 600-800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के पूर्व छिड़काव कर भूमि में भली भांति मिला देना चाहिये अथवा पेन्डामिथेलीन (30 ई.सी) की 1 लीटर सक्रिय तत्व (3.3 लीटर दवा) को 600-800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के तुरन्त बाद (बुवाई के एक से तीन दिन के अंदर)परन्तु अंकुरण से पूर्व छिड़काव करना चाहिये।

खरपतवारनाशी छिड़कते समय ध्यान रखने योग्य बातें:-

-रसायनों का प्रयोग अनुमोदित मात्रा के अनुसार ही करें।

-रसायनों की बोतल/डिब्बों में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही रसायन का प्रयोग करें।

-रसायनों का प्रयोग शुष्क मौसम में प्रात:काल में ही करें।

-रसायन छिड़काव के समय हाथों में दस्ताने व आंखों में चश्मों का प्रयोग करें एवं नाक व मुंह को कपड़े से ढ़कें।

-तेज हवा चलते समय रसायन का छिड़काव न करें।

-हवा की दिशा में ही छिड़काव करें।

-छिड़काव करते समय पहने गये कपड़ों को धोने के उपरान्त ही पहनें।

-शरीर के जिस अंग में रसायन लग गया हो, उसे तुरन्त पानी से धो लें।

-खरपतवारनाशी प्रतिष्ठित कम्पनी का ही खरीदें

-खरपतवारनाशी के पैकेट पर वैधता अवधि (म्गचपतल कंजम)जांच लें।

-मिलते-जूलते नामों के खरपतवारनाशी से सावधान रहें।

-खुले पैकेट से खरपतवारनाशी न ले।

गहरी जुताई के अनेक फायदे

डॉ. बाबू लाल मीणा, कृषि विज्ञान केन्द्र, नौगांवा, अलवर
एवं रघुवीर सिंह मीणा, कृषि अनुसंधान केन्द्र,गंगानगर

हमारे देश में किसान खेत की जुताई का काम बुवाई के समय करते है। गर्मी की जुताई रबी फसलों (गेहु,जौ, चना व सरसों) कटने के 10-15दिनों बाद या अप्रेल-मई के महीनों में करनी चाहिए। फसलों में लगने वाले कीट व्याधियों की रोकथाम या फसलों में उगने वाले खरपतवारों की समस्या से निजात पाने की दृष्टि से बुवाई के समय की गई जुताई से ज्यादा लाभ गर्मी में गहरी जुताई करके ग्रीष्म ऋतु में खेतों को खाली छोड़ दिये जाने से मिलता है। गर्मियों में गहरी जुताई करने से भूमि का तापमान बढ़ जाता है जिससे खरीफके मौसम में धान, बाजरा, ज्वार, मुँगफली, दलहनी फसलों और सब्जियों में लगने वाले कीटों बीमारियों या खरपतवारों की समस्या से एक सीमा तक छुटकारा पाया जा सकता है।

गर्मी की जुताई के लाभ

-गर्मी की जुताई से सूर्य की तेज किरणें भूमि के अन्दर प्रवेश कर जाती है, जिससे भूमिगत कीड़ों के अण्डे, शंकु, लटें व वयस्क नष्ट हो जाते हैं।

-फसलों में लगने वाले उखटा, जड़ गलन आदि रोगों के रोगाणु व सब्जियों की जडों में गांठ बनाने वाले सूत्रकृमि भी नष्ट हो जाते हैं।

-खेत की मिट्टी में ढेले बन जाने से वर्षा जल सोखने की क्षमता बढ़ जाती है जिससे खेतों में ज्यादा समय तक नमी बनी रहती है।

-गहरी जुताई से दुब, कांस, मोथा, गाजर घास, वायासुरी आदि जटिल खरपतवारों से भी मुक्ति पाई जा सकती है।

-गर्मी की जुताई से गोबर की खाद व खेत में उपलब्ध अन्य कार्बनिक पदार्थ भूमि भली-भाति मिल जाते हैं जिससे पोषक तत्व शीघ्र ही फसलों को उपलब्ध हो जाते हैं।

-ग्रीष्मकालीन जुताई से पानी द्वारा भूमि कटाव में भारी कमी होती है।

कैसे करें कातरा कीट का नियंत्रण

ममता देवी चौधरी,डॉ. राम गोपाल सामोता,ममता बाज्या एवं तेजपाल बाज्या,
श्रीकर्णनरेन्द्रकृषिमहाविद्यालय जोबनेर-303329 (जयपुर)

खरीफ फसलों में खासतौर से दलहनी फसलों में कातरे का प्रकोप होता है। कीट की लटवाली अवस्था ही फसलों को नुकसान करती है। इसका नियंत्रण निम्न प्रकार है-

कातरे के पतंगे का नियंत्रण: मानसून की वर्षा होते ही कातरे के पतंगो का जमीन से निकलना शुरू हो जाता है। इन पंतगों का यदि नष्ट कर दिया जाये तो फसलों में कातरे की लट का प्रकोप कम हो जाता है। इसकी रोकथाम प्रकाश क्रिया से संभव है जिसके लिए निम्न प्रकार उपाय अपनायें।

पतंगों को प्रकाश की ओर आकर्षित करने हेतु खेत की मेड़ो पर चरागाहों व खेतों में गैस, लालटेन या बिजली का बल्ब जलायें तथा इसके नीचे मिट्टी के तेल मिले पानी की परात रखें ताकि रोशनी पर आकर्षिक पतंगे पानी में गिरकर नष्ट हो जावें।

कातरे की छोटी अवस्था की लट का नियंत्रण: खेतों के पास उगे जंगली पौधे एवं जहां फसल उगी हुई हो वहां पर अण्डों से निकली लटों एवं इनकी प्रथम एव द्वितीय अवस्था में क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

बंजर जमीन या चरागाह में उगे जंगली पौधों से खेतों की फसलों पर कातरे की लट के आगमन को रोकने के लिए खेत के चारों तरफखाईयां खोदे और खाईयों में मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण भुरक देवें, ताकि खाई में आने वाली लटें नष्ट हो जावें।

कातरे की बड़ी अवस्था की लटकानियंत्रण: खेतों में लटें चनु-चुनकर एकत्रित कर मिट्टी के तेल मिले पानी के घोलमें (5 प्रतिशत) डालकर नष्ट करें या निम्न में से किसी एक दवा का भुरकाव अथवा छिड़काव करें।

मिथाईलपैराथियॉन 2 प्रतिशत या क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत या फोसलॉन 4 प्रतिशत या कार्बोरिल 5 प्रतिशत 25 किलो प्रति हैक्टेयर का भुरकाव करें। जहां पानी उपलब्ध हो वहां डाईक्लोरोवॉस 76 ई.सी. 300 मि.ली. या मिथाईल पैराथियॉन 50 ई.सी. 750 मि.ली. या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. 625 मि.ली. या क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. एक लीटर प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें।

धौलपुर में होने लगी औषधीय पौधों और विदेशी फलों की खेती

धौलपुर (विसं)। जिले के किसानों ने कल्पना भी नहीं की थी कि इस धरती पर एलोवेरा औषधीय पौधों समेत विदेशी फलों की खेती भी हो सकती है,धौलपुर के भिलगवां गांव के ग्रेजुएट 30 वर्षीय किसान राममोहन कुशवाह साढ़े चार बीघा खेत में एलोवेरा ताइवान की रेड लेडी पपीता की खेती शुरू की है। वह संभवत- जिले में पहला ऐसा किसान है जो औषधीय सौंदर्य उत्पादों के पौधों की खेती कर रहा है। वैसे डाबर, पतंजलि, बैद्यनाथ आदि कंपनियां एलोवेरा की खेती का कांटेक्ट कर लेती हैं, लेकिन राममोहन ने अपने स्तर पर ही एलोवेरा अन्य उत्पादों को बेचने का मानस बनाया है। राममोहन की मानें तो एलोवेरा की खेती में नुकसान नहीं है। राममोहन एलोवेरा के साथ ताइवान के रेड लेडी पपीता 786 की दूसरी फसल भी ले रहे हैं। दोनों खेती से सालाना 10-12 लाख रुपये तक कमाई की उम्मीद है। वे बताते हैं कि ताइवान रेड लेडी पपीता की खासियत यह है कि इसके लगाए सभी बीजों के पौधों में फल आता है। वहीं लोकल पपीता में मादा फल देता है, नर में फल नहीं आते हैं।

कृषि सलाह
किसान भाई ध्यान देवें

बाजरा: बुवाई के लिये उन्नत किस्में: बाजरे की डब्ल्यू सी.सी.-75, राज.-171, आई.सी.टी.पी.-8203 प्रमुख संकुल तथा आर.एच.बी.-121, आर.एच.बी.-90, आर.एच.बी.-173, आर.एच.बी.-177, आई.सी.एम.एच.-356, एच.एच.बी.-60, एवं एच.एच.बी.-67(इम्प्रूव्ड), आर.एच.बी.-30 प्रमुख संकर किस्में है । सामान्यत: बाजरे की बुवाई के लिये 4 किलो बीज प्रति हैक्टेयर प्रयोग में लेवे तथा कतार से कतार की दूरी 40-45 से.मी. रखे। जल्दी एवं मध्यम समय में पकने वाली किस्मों जैसे एच.एच.बी.-60 एवं एच.एच.बी.-67(इम्प्रूव्ड) में कतारो के बीज की दूरी 30 से.मी. रखें ।

ज्वार: बुवाई के लिये उन्नत किस्में: सी.एस.एच.-6 (90-100 दिन), सी.एस.वी.-10 (100-110 दिन), सी.एस.वी-15 (105-140 दिन) एवं सी.एस.एच.-9 (105-120 दिन) ज्वार की जयपुर खण्ड के लिये उन्नत किस्में है । ज्वार की बुवाई के लिये प्रति हैक्टेयर 9-10 किलो बीज प्रयोग में लेवे।

मक्का: बुवाई के लिये उन्नत किस्में: बस्सी सलेक्टेड (80-85 दिन), माही कंचन (संकुल, 75-80 दिन) एवं अगेती-76 (संकुल, 85-95 दिन), मक्का की उन्नत किस्में है । मक्का की बुवाई हेतु प्रति हैक्टेयर 20-25 किलो बीज प्रति हैक्टेयर प्रयोग में लेवे ।

मूंग, चंवला, मोंठ, उड़द: बुवाई के लिये उन्नत किस्में

आर.एम.जी.-62, आर.एम.जी.268, आर.एम.जी.492,पूसा वैसाखी, के.-851, आई.पी.एमकृ. 2-3 मूंग की, सी-152, आर.एस.-9, एफएस.-68, आर.सी.-19 चंवला की, आर.एम.ओ.-40, आई.पी.सी.एम.ओ.-912 (विकास) मोंठ की, कृष्णा, टी.-9 उड़द की उन्नत किस्में हैं। इन फसलों के बीजों को बुवाई से पूर्व 3 ग्राम थाइरम या आधा ग्राम बाविस्टिन प्रति किलों बीज की दर से उचारित करें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : ....

संस्था का नाम : ....

पूरा पता : ....

ग्राम : ....तहसील ....

जिला .... राज्य .... पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष कार्य : .... निवास ....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ तीन वर्ष 351 ☐ पांच वर्ष 501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में ....

बैंक का नाम .... ड्राफ्ट चेक क्रमांक .... दिनांक ....

स्थान .... प्रतिनिधि का नाम .... हस्ताक्षर सदस्य ....

दिनांक ....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड़ (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

मुख्यमंत्री को राष्ट्रीय स्तर के 6 पुरस्कार भेंट

जयपुर (कासं) । मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री राजेन्द्र राठौड़ तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अरुण चतुर्वेदी ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य को केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से मिले 6 पुरस्कार मुख्यमंत्री कार्यालय में भेंट किए। श्रीमती राजे ने इन पुरस्कारों पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि यह उपलब्धि सम्बन्धित विभागों के साथ-साथ अन्य विभागों को और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगी। केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर तथा ग्रामीण विकास राज्यमंत्री रामकृपाल यादव से नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 19 जून को आयोजित समारोह में राज्य के अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास सुदर्शन सेठी, ग्रामीण विकास सचिव रोहित कुमार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निदेशक डॉ. समित शर्मा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी कोटा जुगल किशोर मीणा तथा टोंक जिले की ग्राम पंचायत बगड़वा के सरपंच बनालाल गुर्जर ने ये पुरस्कार ग्रहण किए थे। प्रदेश को महात्मा गांधी नरेगा में कन्वर्जेन्स एंड लाइवलीहुड ऑगमेंटेशन अवार्ड तथा ट्रांसपेरेंसी एंड अकाउंटेबिलिटी अवार्ड दिए गए। साथ ही, कोटा जिले को इफेक्टिव इम्पलीमेंटेशन ऑफ मनरेगा तथा टोंक जिले की बगड़वा ग्राम पंचायत को बेस्ट परफॉर्मिंग ग्राम पंचायत इन इम्पलीमेंटेशन ऑफ मनरेगा अवार्ड मिला। इसी प्रकार, राजस्थान आजीविका मिशन को नरेगा कन्वर्जेन्स कार्यों के लिए 2016-17 में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए पुरस्कार तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को पेंशन योजनाओं को ऑनलाइन करने में अग्रणी रहने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

कृषक एप से जान सकेंगे किस फसल में खाद की कितनी जरूरत

नागौर (विसं)। देश के किसान अब मोबाइल फोन पर यह मालूम कर सकेंगे कि उन्हें अपने क्षेत्र में किस फसल के लिए कितनी मात्रा में खाद डालनी है। यह जानकारी उन्हें कृषक एप पर मिलेगी। एप एक बार डाउनलोड करने के बाद इसके इस्तेमाल के लिए इंटरनेट की कनेक्टिविटी भी जरूरी नहीं है। इंडो यूरोपियन चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (आईईसीसीआई) के एग्रीकल्चर नेटवर्क ने किसानों के लिए हाल ही में यह लॉन्च किया है। इसमें पूरे देश के क्षेत्रों की मिट्टी का डेटा और 100 से ज्यादा फसलों की रिकमंडेड मैक्रो न्यूट्रिएंट वेल्यू फीड की गई है। आईईसीसीआई के अधिकारियों के अनुसार पिछले साल केंद्र सरकार ने एक सर्कुलर जारी किया था। इसमें फर्टिलाइजर डीलर की शैक्षणिक योग्यता बीएससी एग्रीकल्चर, डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर इनपुट या केमेस्ट्री से एमएससी होने मापदंड तय किया था। इसका उद्देश्य था कि किसानों को डीलर सही खाद की सही मात्रा फसल मिट्टी के अनुसार बताएं। कोई रजिस्ट्रेशन लॉगइन या ओटीपी नहीं। नाम-पता एक्सेस यानी कोई जानकारी नहीं मांगता है। एक बार डाउनलोड कर लिया तो पूरे समय इंटरनेट से कनेक्ट रहने की जरूरत नहीं है।

यह होगा फायदा

- घर बैठे खाद की सटीक जानकारी फसल के अनुसार किसानों को मिलेगी।
- मिट्टी परीक्षण कार्ड नहीं होने पर भी जानकारी मिलेगी।
- इंटरनेट कनेक्शन नहीं होने पर भी जानकारी ले सकते हैं।
- कृषि विभाग की बिना सलाह के भी फसल में खाद के बारे में निर्णय ले सकते हैं।

राजस्थान को मिला शहरी क्षेत्रों में सुधार कार्यों के लिए 38 करोड़ रुपए की विशेष प्रोत्साहन राशि का पुरस्कार

जयपुर (कासं)। राजस्थान को शहरी क्षेत्रों में सुधार कार्यो के लिए देशभर में सातवें स्थान पर रहने के लिए भारत सरकार ने 37.94 करोड़ रुपए की विशेष प्रोत्साहन राशि का पुरस्कार प्रदान किया है । केंद्रीय शहरी विकास मंत्री वेंकैया नायडू ने राजस्थान के स्थानीय निकाय विभाग के प्रमुख शासन सचिव डा मनजीत सिंह को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में नेशनल वर्कशाप इन अर्बन ट्रांसफार्मेशनसमारोह में प्रदान किया। इस वर्कशाप में राजस्थान 29 मिशन सिटीज के कमिश्नर ने भाग लिया । वर्कशाप में स्मार्ट सिटी उदयपुर के कमिश्नर और हृदय योजना अजमेर के आयुक्त ने पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण से संभागियों को प्रभावित किया।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com